

GENERAL PSYCHOLOGY

(1)

Paper-I

B.A. (Hons & Subsidiary) Part-I

By - Ar. Ramendra Kumar Singh,

H.O.D. of Psychology

S.K. College, Memraon (Buxar)

V.K.S.U, Ara (Bhojpur)

Bihar

Email - ramendrasinghdkc@gmail.com

चिन्तन के स्वरूप, विशेषताएँ एवं सन्निकृष्ट प्रक्रियाएँ
Nature, Characteristics and Process of thinking

चिन्तन एक उच्च मानसिक प्रक्रिया है। इसका साधारण अर्थ 'सोचना' होता है। यह एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसकी उत्पत्ति व्यक्ति किसी समस्या के उत्पन्न होने से होगी तथा उसे समस्या का समाधान निकालने के लिए प्रयुक्त की जाती है। यानी जैसे ही हमारे समक्ष कोई समस्या आती है, हम (प्राणी) उसका समाधान ढूँढने लगते हैं और उस समस्या का समाधान या हल निकालने के लिए सोच विचार करने लगते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि "किसी समस्या से निजात पाने के लिए सोच विचार करने की प्रक्रिया ही चिन्तन है।"

मनोवैज्ञानिकों ने चिन्तन को अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया है। हम यहाँ दो प्रमुख मनोवैज्ञानिकों की परिभाषाओं का जिक्र करेंगे जो चिन्तन के स्वरूप पर अधिक से अधिक प्रकाश डालते हैं। इसे परिभाषित करते हुए वारेन ने कहा है। -

"चिन्तन एक प्रतीकात्मक स्वरूप की विचारात्मक मानसिक प्रक्रिया है, जिसका प्रारंभ व्यक्ति के समक्ष उपस्थित किसी नये समस्या से होगा, और समस्या तथा व्यक्ति की मानसिक क्षमता (Mental Set) से सम्बन्धित प्रयत्न एवं श्रम की क्रियाएँ होंगी तथा अंत में समस्या का समाधान या निष्कर्ष मिल जायगा है।"

इसी तरह कागन एवं हैमिंग ने भी इसकी वड़ा ही सुन्दर एवं संतुलित परिभाषा दी है। -

"चिंतन, प्रतिमाओं, प्रतीकों, सम्प्रत्ययों, नियमों एवं अन्य मध्यस्थ उपायों का मानसिक जोड़-तोड़ या परिवर्तन है।"
 (Thinking can be described as the mental manipulation of images, symbols, concepts, rules and other meditational units.)

उपर्युक्त दोनों परिभाषाओं का यदि विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए तो चिंतन का स्वरूप स्पष्ट हो जायगा और इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ उभर कर आती हैं :-

(1) चिंतन का प्रारम्भ किसी समस्या से होता है। समस्या से तात्पर्य ऐसे क्लेश एक ऐसी परिस्थिति या घटना से है जिसमें प्राणी को अपने लक्ष्य तक पहुँचने में दिक्कत होती है। समस्या सापेक्ष होती है। यानी एक व्यक्ति के लिए जो समस्या है दूसरे के लिए नहीं भी हो सकती है।

(2) यह एक विचारात्मक प्रक्रिया है। चिंतन में समस्या से निजात पाने के लिए विचारों का गंभीर लगा रहना है जिसमें प्रतीक आदि का सहारा लिया जाता है। चिंतन में आपके समझ उधीपन हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है।

(3) चिंतन में प्रयत्न एवं श्रम होते हैं। जब व्यक्ति समस्या से समाधान चाहता है तो कई बार प्रयत्न एवं श्रम की क्रिया होती है इस प्रक्रिया में कभी समाधान मिल जाती है तो कभी नहीं भी मिलती है। यह प्रयत्न और श्रम की क्रिया दो तरह की होती है - शारीरिक एवं एवक्त (Explicit), मानसिक या अवाक्य (Implicit)

(4) चिंतन की क्रिया समाधान मिलने तक जारी रहती है। चिंतन में लक्ष्य मिलने तक यह क्रिया चलते रहती है। जैसे ही समाधान मिल जाता है यह समाप्त हो जाती है।

(5) चिंतन में सम्प्रत्यय, कल्पनाओं, प्रतिमाओं आदि का भी सहारा लिया जाता है। इसके लिए Overt behaviour को Covert behaviour दोनों करना है।

(6) हमें, आदि चिंतन पर विभिन्न प्रकार के चित्र हैं। इसमें आवाज, दृश्य, visual images, Audio images आदि को भी शामिल है।

6) मानसिक चित्रणों की प्रमुख भूमिका होती है, चिंतन में Mental Set (मानसिक ढंग) का प्रमुख स्थान होता है। यानि इस समस्या समाधान के लिए चिंतन एक निश्चित दिशा में करते हैं। यह कई बार होता है।

चिंतन और कल्पना

चिंतन एवं कल्पना दोनों उच्च कोटि और जटिल मानसिक प्रक्रियाएँ हैं, जो उच्च कोटि के प्राणियों में पाई जाती हैं। दोनों में फ़ीफ़ों का उपयोग होता है। इसके बावजूद दोनों में कुछ अंतर हैं:-

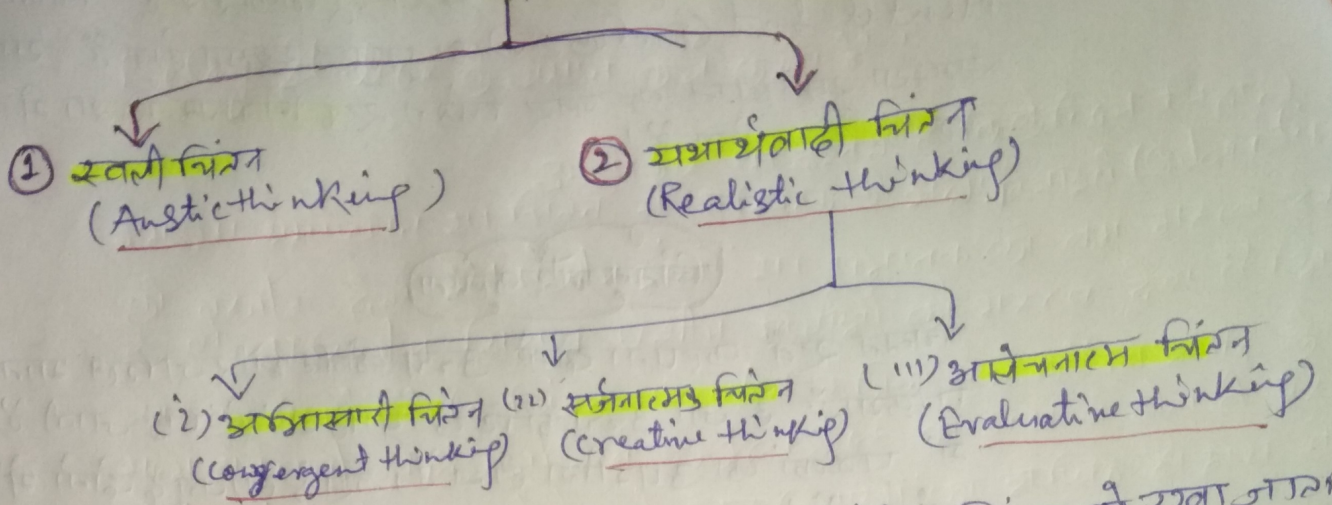
- (i) चिंतन तर्कपूर्ण होता है। इसके तुलना में कल्पना में तर्क का अभाव पाया जाता है।
- (ii) चिंतन का आगमन समस्या से होता है और यह उसके समाधान तक चलने रहता है। दूसरी तरफ़ कल्पना (Imagining) में कोई समस्या नहीं रहने पर भी चलती है।
- (iii) चिंतन में एक निश्चित दिशा होती है, कल्पना में इसका अभाव होता है।
- (iv) चिंतन का सम्बन्ध कल्पना की तुलना में वास्तविकता से अधिक होता है।
- (v) चिंतन में समस्या समाधान के लिए Trial & Error की क्रिया कल्पना की तुलना में अधिक होती है।

विषय के क्षेत्र पर हम कह सकते हैं कि उपर्युक्त अंतर मोटे तौर पर दिया गया है। सूक्ष्म तौर पर अगर देखा जाए तो दोनों में अंतर करना कठिन है। दोनों ही सर्जनात्मक प्रक्रिया हैं। सूक्ष्म रूप से दोनों ही एक दूसरे में मिली जुली रहती हैं।

चिंतन के प्रकार

चिंतन के प्रकार को लेकर मनोवैज्ञानिकों में मतभेद है, परन्तु जिम्बार्डो और रुच (Jimbarard & Ruch) ने (1933) में इसे मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा जो काफी तर्कसंगत लगता है। यहाँ भी हम उसी आसक्ति में देखेंगे:-

चिंतन के प्रकार



(1) स्वल्प चिंतन: - इस प्रकार की चिंतन में जैसे चिंतन को रखा जाता है जिसमें काल्पनिक विचारों एवं बहानों की अभिव्यक्ति होती है। स्वप्न, स्वप्न चित्र, अभिलाषा आदि इसी प्रकार की चिंतन है। जैसे कोई छात्र कक्षा आगे-पलकर हिरो बनने और घर वाला खरीदने आदि का चिंतन करता है तो Austic thinking है।

(2) यथार्थवादी चिंतन: - जो सम्बन्ध यथार्थ और वास्तविकता से होता है। उसके सहारे लच्छे समस्या से निजात पाने है, जैसे कार से गिरा करके समय अचानक कार के रुक जाने पर उत्पन्न समस्या से निपटने का चिंतन आदि यह तीन प्रकार के होते हैं।

(i) अभिप्रायारी चिंतन (Convergent thinking): - दिए गये तथ्यों से निष्कर्ष निकालना। जैसे $5 \times 2 = ?$ इसमें लच्छे आपने जीवन के अनुभव के आधार पर चिंतन शीघ्र विषय करता है।

(ii) सर्जनवादी चिंतन (Creative thinking): - इस पर के चिंतन को आगनात्मक चिंतन कहा जाता है। इस तरह के चिंतन में लच्छे अपनी तरफ से जोड़कर निष्कर्ष पर पहुँचा है। इसमें नया सृजन हो जाता है।

(iii) आलोचनात्मक चिंतन: - इस तरह की चिंतन में लच्छे किसी बात, तथ्य आदि की वास्तविकता जानने के लिए उसके गुण दोषों (b) आलोचनात्मक मूल्यों को बनाए रखता है। यथावत् ही लच्छे अभिप्रायारी चिंतन एवं सर्जनवादी चिंतन पर मतों वैज्ञानिक अधिक वल देते हैं।

निवर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि चिंतन उच्चकोटि की प्राणियों में पाई जानेवाली एक उच्चस्तरिय मानसिक प्रक्रिया है, जिसकी उत्पत्ति किसी समस्या के आगमन से होगी तथा उसका अंत समस्या के समाधान के साथ ही हो जागा है। इसकी अपनी कुछ विशेषताएँ हैं जिनका कानि स्थान विशेष पर ऊपर लिखा जा चुका है।

रोमेश्वर
17/6/21

सुनील
सुनील

प्रश्न का उत्तर देना ही है।
इसलिए मैं अपने मते का ब्युत्पत्ति दे रहा हूँ।
इसका अर्थ है, उत्पत्ति का अर्थ है उत्पत्ति।
इसके अर्थ में ही उत्पत्ति का अर्थ है उत्पत्ति।
इसके अर्थ में ही उत्पत्ति का अर्थ है उत्पत्ति।
इसके अर्थ में ही उत्पत्ति का अर्थ है उत्पत्ति।
इसके अर्थ में ही उत्पत्ति का अर्थ है उत्पत्ति।
इसके अर्थ में ही उत्पत्ति का अर्थ है उत्पत्ति।
इसके अर्थ में ही उत्पत्ति का अर्थ है उत्पत्ति।